© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 2 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Engineering and Technology

प्राचीन भारतीय आयुध

डॉ0 दानपाल सिंह
0177A काजीपुरखुर्द,
गोरखपुर, उ0प्र0।

प्राचीन भारत में युद्ध–विज्ञान का विकास बहुत अधिक हुआ था और विविध आयुधों का आविष्कार हो गया था।

वैदिक युग में प्रमुख आयुध इस प्रकार थे–धनुष–बाण,[1] ऋष्टि,[2] अंकुश,[3] शतघ्नी,[4] परशु,[5] कृपाण,[6] वज्र[7] आदि। कवच और शिरस्त्राण का प्रयोग आत्मरक्षा के लिए किया जाता था। रामायण में अधिक विकसित आयुधों का उल्लेख है। इसमें धनुष–बाण, गदा, खड्ग, तोमर, शक्ति, पट्टिश आदि का उल्लेख मिलता है। शब्द–भेदी बाणों का, दिव्यास्त्रों, ब्रह्मास्त्र आदि का वर्णन है। दशरथ ने शब्दभेदी बाण का प्रयाग किया था विश्वामित्र ने राम को अनेक दिव्य आयुधों– जृम्भकास्त्र आदि की शिक्षा दी थी। रामायण–काल में प्रकृति में उपलब्ध पदार्थों–पाषाण–शिलाओं, वृक्ष के तनों आदि का भी आयुधों के रूप में प्रयोग है। शरीर के अंगों का भी, जैसे– मुष्टि, चपेटिका, नखाघात, दन्त–प्रहार, पाद–प्रहार आदि का भी युद्धों में प्रयोग किया जाता था।

महाभारत में युद्ध विज्ञान और अधिक विकसित हुआ। अनेकविध आयुधों का निर्माण किया गया था। उद्योग पर्व में अनेक आयुधों का वर्णन आता है। सामान्य आयुधों के अतिरिक्त दिव्य अस्त्रों–मोहनास्त्र, वरूणास्त्र, अग्न्यस्त्र, पाशुपतास्त्र, ब्रह्मास्त्र आदि से शत्रुओं को पराजित किया जाता था। पृथ्वी को भेदकर जल की धारा को प्रवाहित करने वालो बाणों का प्रयोग विदित था।

अर्थशास्त्र, शक्रनीतिसार आदि ग्रन्थों में आयुधों का वैज्ञानिक विवेचन है। चाणक्य ने आयुधों को आठ वर्गों में विभाजित किया था–

स्थिरयन्त्र, चलयन्त्र, हलमुख, धनुष, बाण, खड्ग, क्षुरकल्प और आयुध।[8] शुक्रनीति आयुधों को दो वर्गों में विभक्त करती है – अस्त्र और शस्त्र। अस्त्र आयुध वे हैं, जिनका प्रहार शारीरिक शक्ति, मन्त्र, यन्त्र या अग्नि के बल से फेंककर किया जाता है। अस्त्र आयुध वे हैं, जिनका प्रहार शारीरिक शक्ति, मन्त्र, यन्त्र या अग्नि के बल से फेककर किया जाता है। शस्त्र आयुधों को हाथों में पकड़े–पकड़े ही शत्रु पर आघात किया जाता है।[9] शुक्रनीति में बारूदी आयुधों– अग्निचूर्ण[10] और बन्दूक[11] के वितरण दिये गये हैं। अग्निचूर्ण को बनोन की विधि इस प्रकार है– यवक्षार पांच पल, गन्धक एक पल और कोयले का चूर्ण एक पल।[12] चौदहवीं शताब्दी के विजयनगर के अभिलेखों में बारूदी हथियारों का उल्लेख है।

प्राचीन समय में प्रयुक्त आयुधों वर्गों में विभक्त किया गया है–

1–	**दिव्य आयुध**	2–**धनुष–बाण**	3–**अस्त्र**
4–	**शस्त्र**	5–**दण्ड–आयुध**	6–**प्राकृति आयुध**
7–	**यन्त्र आयुध**	8–**पाश**	9–**अन्य आयुध**

दिव्य आयुध : प्राचीन साहित्य में अनेक दिव्य आयुधों का वर्णन है। इनमें विभिन्न देवताओं के अंश की कल्पना की गई थी। इनका प्रयोग सन्देहास्पद है। पौराणिक गाथाओं के अनुसार विश्वकर्मा ने अपनी पुत्री संज्ञा का विवाह सूर्य से किया। पुत्री द्वारा पति की तेजस्विता को सहन न करने के कारण विश्वकर्मा ने सूर्य के तेजस्वी अंश को कुछ छीन दिया। इस अंश से विभिन्न देवताओं ने अपने शस्त्रों का निर्माण किया।[13]

प्राचीन साहित्य में वर्णित कुछ दिव्य आयुधों का परिचय निम्न है–

जृम्भक अस्त्र : जृम्भक अस्त्रों की शिक्षा विश्वामित्र ऋषि ने राम को दी थी। इनका संचालन रहस्यमय दिव्य मन्त्रों के उच्चारण से किया जाता था। ब्रह्मा आदि ऋषियों के तपः पुंज से ये अस्त्र अवतीर्ण हुए।[14] विश्वामित्र के एक पूर्वज कृशाश्व ने तप द्वारा ब्रह्मा से इनको पाया। वंश–परम्परा से ये विश्वामित्र को प्राप्त हुए। जृम्भकास्त्रों का प्रभाव अनुपम था और कोई इनको रोक नहीं सकता था।

ब्रह्मास्त : दिव्य अस्त्रों में ब्रह्मास्त्र अतिशक्तिशाली था। विश्वमित्र ने इसको भी राम को दिया था। राम ने इसी से रावण का वध किया। कालिदास के अनुसार ब्रह्मास्त्र अमोघ था। यह भयानक फण उठाये शेषनाग के समान प्रतीत होता है। इसके फणों से निकलने वाली ज्वालायें गगन मण्डल में दस उल्काओं का निर्माण करती है।

आग्नेयास्त्र : इस अस्त्र का सम्बन्ध अग्नि देवता से माना गया है। इससे आकाश में अग्नि के कण बरसने लगते हैं। राम ने समुद्र को सुखाने के लिए इस अस्त्र को धनुष पर चढ़ाया था।

वारूणास्त्र : वारूणास्त्र को वरूण देवता का प्रतीक समझा गया था। इस अस्त्र के प्रयोग से मेघ उमड़कर तीव्र वर्षा करते हैं अग्नि को बुझा देते हैं।

वायव्यास्त्र : वायव्यास्त्र के सम्बन्ध वायु देवता से माना गया। इसके प्रयोग से तीव्र आंधियां चलती हैं। वायु के चलने से अग्नि की ज्वालायें और भी तीव्र हो जाती हैं।

ऐन्द्रास्त्र : ऐन्द्रास्त्र का सम्बन्ध इन्द्र देवता से रहा। इन्द्र के मन्त्र से बाण को अभिमन्त्रित करके इसे छोड़ते थे।

मायाहर अस्त्र : प्राचीन साहित्य में प्रसिद्ध है कि युद्धों में राक्षस अनेक प्रकार की माया (कपट–आचरण) करते थे। विश्वामित्र ने राम को मायाहर अस्त्र दिया था, जिसमें राक्षसी माया को नष्ट करने की सामर्थ्य थी।

तामिस्र अस्त्र– : तामिस्र अस्त्र के प्रयोग से चारों ओर घना अंधेरा छा जाता था।

नारायणास्त्र : नारायण (विष्णु) के नाम से इस अस्त्र की रचना हुई थी। राम ने सुग्रीव के समक्ष अपने पराक्रम को प्रदर्शित करने के लिए नारायणास्त्र से सात ताण वृक्षों का छेदन किया था।

पाशुपतास्त्र : पाशुपतास्त्र का सम्बन्ध भगवान् शिव से था। शिव ने इस अस्त्र को अर्जुन को दिया था। यह अस्त्र अमोघ था। इससे प्रलयंकारी दृश्य उपस्थित हो जाते थे।

अशनि (वज्र) : प्राचीन भारतीय साहित्य में अशनि को इन्द्र का विशेष आयुध कहा गया है। वैदिक साहित्य में इसका प्रचुर वर्णन हैं।[15] अर्थशास्त्र के अनुसार वज्र लोहे के डण्डे के रूप में था।[16] दास महोदय का कथन है प्रारम्भिक युग में वज्र पत्थर का होता होगा, जो उत्तरवर्ती युग में हड्डियों का बनाया जाने लगा।[17] महाभारत

में वज्र को आठ चक्रों वाला महान् भयानक आयुध कहा गया है। इसकी रचना महादेव ने की थी।[18] रामायण में भी इस आयुध के प्रयोग का वर्णन हुआ है।[19]

उत्तरवर्ती चित्रकला और शिल्प में अशनि के अनेक स्थानों पर दर्शन होते हैं। यह दो प्रकार का है। एक तो डण्डे के आकार का है, जो बीच में पतला तथा दोनों किनारों पर चौड़ा है। दूसरा दो मुख का है। इसमें दोनों ओर दो नुकीले दांत बने होते थे।[20] इन्द्र के हाथ में वज्र का अंकन प्राचीन मूर्तियों और चित्रों में हुआ है।[21] बौद्ध देवी वज्रतारा की मूर्तियों में एक हाथ में वज्र का अंकन है।[22] गौतम बुद्ध की एक मूर्ति के नीचे 10 वस्तुयें अंकित हैं, इनके ठीक बीच में वज्र है।[23]

वज्र आयुध को अत्यधिक कठोर कहा गया है। कालिदास तथा अन्य कवियों के अनुसार यह कठोरता का उपमान है।[24]

शक्ति : शक्ति का वर्णन दिव्य तथा सामान्य दोनों प्रकार के आयुधों के रूप में मिलता है। ब्रह्मा ने एक शक्ति रावण को दी थी। यह अति दैदीप्यमान और मंत्रों से अभिमन्त्रित थी।

शक्ति को दुर्गा और कार्तिकेय का आयुध माना गया है। प्राचीन शिल्प में कार्तिकेय के बायें हाथ में शक्ति का अंकन है।[25] कहा गया है कि शक्ति आयुध को मय ने बनाया था। यह अमोघ थी और शत्रु के जीवनरूपी शोणित का पान करती थी। इसमें आठ घण्टियां लगी रहती थीं। चलते समय इसमें से चीत्कार निकलती थी और अग्नि की रेखा बनती जाती थी।

शक्ति का उल्लेख सामान्य मानव आयुध के रूप में भी है, इसको फेंककर वार किया जाता था। महाभारत के अनुसार यह लोहे की बनती थी। इसमें सोने की प्लेट तथा घण्टियां लगी रहती थीं।[26] अर्थशास्त्र में शक्ति का परिगणन हलायुधों में हुआ है। यह करवीर के पत्ते के आकार की होती थी। यह चार हाथ लम्बा धातुमय आयुध था तथा गोस्तनाकार मूठ होती थी।[27]

धनुष–बाण : प्राचीन भारतीय आयुधों में धनुष–बाण का प्रमुख स्थान था। आयुधों में धनुष की प्रधानता होने के कारण इस विद्या को धनुर्वेद कहा गया है।

धनुष की रचना लम्बे लचीले दण्ड से की जाती थी। यह प्रायः बांस से बना होता था। इसके दोनों किनारों को कोटि या अटनी कहते हैं। डोरी (ज्या) की लम्बाई दण्ड से कुछ छोटी होती है। दण्ड को झुकाकर दोनों किनारों को डोरी से बांध देते हैं। इस प्रकार दण्ड कुछ गोलाकार और डोरी सीधी रहती है। धनुष पर बाण का सन्धान करके डोरी और डण्डी को विपरीत दिशाओं में खींचकर डोरी को छोड़ देने से उसके सामर्थ्य से बाण दूर तक चला जाता है। इस प्रक्रिया में डोरी में उच्च टंकार–ध्वनि होती है।

बांस के अतिरिक्त धनुर्दण्ड की रचना अन्य पदार्थो से भी होती थी। मुख्यतः चार प्रकार के पदार्थ थे– ताल, कांप (एक विशेष प्रकार का बांस), दारू और श्रृंग। इसी आधार पर धनुष के चार नाम हुए– कार्मुक, कोदण्ड, द्रूण और धुनः। डोरी भी विभिन्न पदार्थों से बनाई जाती थी, यथा–मूर्वा, अर्क, शण, गवेधु, वेणु अथवा स्नायु।[28]

बाण भी अनेक पदार्थों से बनते थे। इनमें सर्वाधिक प्रचलित शर (सरकण्डा) था। सरकाण्डों की मजबूत डण्डी, बैंत और नरकट का प्रयोग होता था। बाण के एक सिरे पर लोहे की नोक या तेज की गई हड्डी की नोक लगाई जाती थी। तीव्र वेग से छोड़े जाने पर यह लक्ष्य के शरीर में घुस जाती थी। शर के दूसरे सिरे पर किसी पक्षी के, विशेष रूप से कंक पक्षी के पंख लगाये जाते थे। इससे बाण की गति त्वरित हो जाती थी।

बाणों के अनेक नाम प्राचीन साहित्य में लिखित हैं, यथा–बाण, शिखि, शिलीमुख, काण्ड, नाराच, क्षुरप्र, शर, भेदिक आदि।

सरकण्डे की डण्डी से बनने के कारण इसे शर और बाण कहा गया था। नरकट आदि गांठदार डण्डियों से बनाये जाने से यह काण्ड या नाराच कहा गया। नोकदार होने से यह शिखि और शिलीमुख हुआ।

बाणों की नोकें अनेक प्रकार की हो सकती थीं– सीधी, शूलाकार, अर्धचन्द्राकार, पक्षी की चोंच के समान, आदि। छुरे के समान नोंक वाला बाण क्षुरप्र था। शुक्र का कथन है कि क्षुरप्र की लम्बाई नाभि तक होती है तथा इसमें से चन्द्रमा के समान लाभ विकरित होती है।[29] कवच का भी भेदन करने से समर्थ बाण भेदिक था।

प्राचीन साहित्य में ऐसे बाणों का भी वर्णन है, जो प्रहार किये जाने पर पुनः धनुर्धारी के पास वापस आ जाते थे। राम ने जिस बाण से सात ताल वृक्षों का भेदन किया, वह उनके पास वापस आ गया।

अस्त्र : अस्त्र आयुध वे हैं, जिनकों फेंककर शत्रु पर आघात किया जाता है। प्रमुख अस्त्र निम्न थे–

शक्ति, चक्र, भिन्दिपाल, कुन्त, त्रिशूल, तोमर, प्रास, शंकु, असिधेनुका आदि।

शक्ति : शक्ति की दिव्य आयुधों में वर्णन किया जा चुका है। यह लोक में भी वर्णित है। रामायण और महाभारत में शक्ति के प्रयोग के वर्णन मिलते हैं। इसका उल्लेख पहले किया जा चुका है।
चक्र : भारतीय पौराणिक कथाओं के अनुसार विष्णु भगवान् का प्रधान आयुध चक्र था, जिसका नाम सुदर्शनचक्र था। विष्णु के अवताररूप कृष्ण का भी यह आयुध रहा। भारतीय कलाओं में इसका अंकन हुआ है। यह विकसित कमल के समान है। इसकी पंखुड़िया आरे के समान कार्य करती हैं।[30]
भिन्दिपाल : यह भारी आयुध एक गोले के रूप में था। इसका आकार गोफी या गुलेल का–सा होता थां[31] भिन्दिपाल का कार्य था– दाहकता उत्पन्न करना, तोड़–फोड़ करना, काटना और आघात करना।[32] मत्स्य पुराण के अनुसार यह अस्त्र लोहे का होता है तथा इसको फैंककर मारा जाता है।[33] चाणक्य ने भिन्दिपाल की गणना हलमुख आयुधों में की है। गणपति शास्त्री ने बड़े फने वाले कुन्त को ही भिन्दिपाल बताया है।[34]
कुन्त और प्रास : ये वर्तमान भाले के समान थे। कुन्त कुछ बड़ा तथा प्रास छोटा था। इसमें पीछे बांस की लम्बी डण्डी और आगे तीक्ष्ण नोकदार फलक होता था। आमने–सामने के युद्ध में इसको फैंककर मारा जाता था।

कौटिल्य ने कुन्त और प्रास की गणना आयुधों में की है। अर्थशास्त्र की टीका में गणपति शास्त्री ने तीन प्रकार के कुन्त बताये हैं – उत्तम कुन्त सात हाथ लम्बा, मध्यम कुन्त छः हाथ लम्बा और कनिष्ठ कुन्त पांच हाथ लम्बा होता है।[35]

तोमर : तोमर भी कुन्त के समान है, परन्तु उससे कुछ छोटा है। इस प्रकार प्रहार भी फैंककर किया जाता है।
त्रिशूल : त्रिशूल भी भाले के आधार का होता है, परन्तु इसमें आगे तीन नोकें होती हैं। यह भगवान शिव का प्रधान आयुध था। चाणक्य ने त्रिशूल की गणना चलयन्त्रों मे की है।[36]
शंकु : ये छोटे आकार के, आगे से नुकीले अस्त्र थे। सैनिकों के पास अनेक शंकु होते थे। एक–एक शंकु को निकालकर वे शत्रु पर फेंकते रहते थे।
असिधेनका : यह छोटे आकार का आयुध (छुरी) आगे से तेज नोकदार था। इसको शस्त्री, असिपुत्री, छुरिका और असिधेनुका नाम दिये गये थे।
शस्त्र : शस्त्रों को हाथ में पकड़कर, बिना फेके उपयोग में लाया जाता था। प्रसिद्ध शस्त्र थे– परशु, कुठार, हलमुख, करवाल, खड्ग निर्स्त्रिश, चन्द्रहास, कृपाण, कौक्षेयक, असि, अनिपत्र आदि।

शस्त्रों में परशु का बहुधा उल्लेख है। अर्थशास्त्र में इसकी गणना क्षुरकल्प आयुधों में है।[37] यह लकड़ी काटने वाले कुल्हाड़े के समान होता है। गणपति शास्त्री ने इसको 24 अंगुल का सम्पूर्ण लोहे का बना कहा है।[38] कुठार भी परशु जैसा, किन्तु उससे भारी होता है।

प्राचीन साहित्य में परशुराम का प्रधान आयुध परशु था। यह उनको अपने गुरू शिव से पारितोषिक रूप से प्राप्त हुआ था। शिव के अनेक प्राचीन शिल्पों में आयुध के रूप में परशु का अंकन है।[39]

हलमुख में हल के समान आगे को मुड़ी हुई नोक होती थी। यह बलराम का प्रिय आयुध था। करवाल, खड्ग, निस्त्रिंश, चन्द्रहास, कृपाण, कौक्षेयक, असि और असपित्र छोटी–बड़ी विभिन्न आकार की तलवारें थे। इसके फलक विशुद्ध फौलाद के नीले रंग के होते थे। तेज धार एक ओर या दोनों ओर हो सकती थी। आगे से ये नोकदार या गोलाई लिये होते थे। धार सीधी या गोलाई लिये हो सकती थी। भगवतशरण उपाध्याय ने असि को लम्बी तलवार[40] और खड्ग को छोटो तलवार[41] कहा।

विभिन्न प्रकार की तलवारों को सुरक्षित रखने के लिए आवरणकोष (म्यान) होती थी। तलवारों को कमर के एक पार्श्व में बांधा जाता था। अतः इनको कोक्षेयक कहा गया।

दण्ड आयुध : दण्ड आयुधों में तेज धार नही होती। अग्रभाग मोटा होता है। इसके प्रहार से शत्रु के अंगों को तोड़ा जा सकता है। आघात के हलके या गम्भीर होने के हेतु है–प्रहारकर्त्ता की शक्ति, आयुध का भार और कठोरता। प्रमुख दण्ड आयुध थे– गदा, मुद्गर, मूसल, पट्टिश, दण्ड आदि।

गदा लोहे का एक मोटा डण्डा था, जिसके सिरे पर लोहे का मोटा गोला होता था। डण्डे को हाथों में पकड़कर आघात करते थे। भीम का यह प्रिय आयुध था। भारतीय शिल्प में गदा अनेक स्थानों पर वर्णित है।[42] विष्णु का भी यह प्रिय आयुध था उनके एक हाथ में गदा का अंकन है। कुबेर देवता का आयुध भी गदा था।

मुद्गर हथौड़े के आकार का आयुध था। अर्थशास्त्र में गदा और मुद्गर की गणना चलयन्त्रों में है।[43] मूसल लोहे का बना मोटा तथा छोटा डण्डा था। इसका प्रहार शत्रु के अंगों का चूर्रा कर देता था। यह बलराम का प्रिय आयुध था।

पट्टिश लोहे का लम्बा चपटा डण्डा था। गणपति शास्त्री के अनुसार इसके दोनों सिरों पर त्रिशूल अंकित होता था।[44] दण्ड आयुध आधुनिक लाठी ही था। यह मजबूत बांस का बनता था तथा सिरे पर धातु का खोल चढ़ाया जाता था। यम का आयुध दण्ड था। कुछ समालोचकों ने दण्ड को गदा के समान आयुध माना है।[45]

प्राकृतिक आयुध : प्रकृति में स्वयं उपलब्ध आयुध इस वर्ग में हैं। ये दो प्रकार के हो सकते हैं – योद्धा के स्वयं के अंग और प्रकृति में अनायास सुलभ साधन।

योद्धाओं के स्वयं शरीर के अंग–हाथ, पैर, चपेटिका, मुष्टि, दन्त, नख आदि ही आयुध थे। इनसे योद्धा प्रहार करते थे और रक्षा करते थे। राम–रावण युद्ध में वानरों ने मुख्यतः इन्हीं का प्रयोग किया।

युद्ध–स्थल के समीप विद्यमान पाषाण, वृक्ष आदि भी आयुध हो जाते थे। राम–रावण–युद्ध में इनका प्रचुर उपयोग हुआ था। वृक्षों को उखाड़कर, पर्वतों के शिखर तोड़कर और शिलाओं को उठाकर आयुधों के रूप में प्रयोग किया गया।

यन्त्र आयुध : प्राचीन आयुधों में यन्त्र आयुधों का वर्णन है। इसकी सहायतासे सुदूर स्थित शत्रुओं पर प्रहार किया जा सकता था। चाणक्य ने यन्त्र–आयुध वर्ग में यन्त्रपाषाण, गोष्पदपाषाण, मुष्टिपाषाण, रोचनी और दृषद् आयुध गिनाये हैं।[46] इनसे विभिन्न आकार के पत्थर शत्रुओं में फेंके जा सकते थे।

प्राचीन साहित्य में तीन प्रकार के यन्त्र आयुधों का विशेष उल्लेख है– यन्त्र, भुशुण्डी और शतध्नी। यन्त्र आयुध धातु का बनता था। इसके द्वारा पत्थर लोह–गोलक आदि से सुदूरस्थ शत्रु पर प्रहार किया जा सकता था।

शतध्नी का उल्लेख रामायण और महाभारत में हुआ है। लंका के द्वारों पर राक्षसों द्वारा सैकड़ों शतघ्नियां सजाई गई थी।[47] महाभारत–युद्ध में शतघ्नियों का प्रचुर संख्या में उपयोग हुआ था। घटोत्कच के पास एक शतघ्नी थी, जो चार पहियों पर चलती थी और एक–साथ चार घोड़ों को मार सकती थी।[48]

पाश : पाश एक विशेष प्रकार की रस्सी थी, जिसको विशेष विधि से फेंक कर शत्रु को बांधा जा सकता था। ऋग्वेद में पाश को वरूण और सोम का आयुध कहा गया है।[49] पौराणिक साहित्य के अनुसार यह वरूण का विशेष आयुध है। अग्निपुराण में वर्णन है कि पाश दस हाथ लम्बा होता है तथा इसके किनारो पर फन्दे होते हैं। इनको सन, जूट, मूंज, तांत, चमड़ा अथवा मजबूत धागों से बनाते हैं। प्रयोग करते समय इसको हाथ के सामने की ओर रखते हैं।[50] शुक्रनीति के अनुसार पाश को तीन हाथ लम्बा, डण्डे के आकार का बनाया जाता है। इसमें लोहे के तीन नुकीले दान्ते तथा लोहे की रस्सी लगी रहती है।[51] प्राचीन पाश का विकास सम्भवतः इसी रूप में हुआ था।[52]

अन्य आयुध : प्राचीन समय में आयुधों के रूप में अनेक अन्य इस प्रकार के पदार्थ हैं, जिनका परिगणन ऊपर के वर्गो नहीं हो सकता। आक्रमणकारी सेना को रोकने के लिए खौलती हुई मज्जा, तेल, चर्बी आदि द्रव्यों, लाख–राल जैसे प्रज्वलनशील पदार्थों एवं जलते हुए क्षमिक, सन, कपास, पट्टसूत्र, तसर आदि वस्त्रों का प्रयोग भी होता था।

संदर्भ सूची

1— ऋग्वेद 5/57/2, 6/75/17
2— तत्रैव 5/52/6, 5/57/2 एवं 6
3— तत्रैव 81—17/10, 10/44/9
4— तैत्तिरीय संहित, 1/5/7/6
5— ऋग्वेद, 10/28/8
6— तत्रैव, 10/22/10
7— तत्रैव, 10/48/3, 10/113/5
8— अर्थशास्त्र के आयुधागाराध्यक्ष के अध्याय में आयुधों का विशद वर्णन हैं
9— शुक्रनीति, चतुर्थ अध्याय
10— शुक्रनीति, 2.93.1196 और 4.7.208
11— शुक्रनीति 4.7.209—219
12— धर्मशास्त्र का इतिहास, दूसरा भाग, पृ0 686
13— विष्णुपुराण
14— उत्तररामचरित 6.15 महावीरचरित 1.42
15— ऋग्वेद 3.56.2
16— अर्थशास्त्र अधिकरण 2, अध्याय 18
17— ऋग्वैदिक कल्चर, पृ0 51
18— अष्टचक्रां महाघोरामशर्नि रूद्रनिर्मिताम्। — महाभारत 7, 135.96
19— शक्तिवृक्षायुधांश्चैव पट्टिशाशनिधारिणः। —रामायण, सुन्दरकाण्ड 4.21
20— दी डेवलेपमेंट ऑफ आइकोनोग्राफी पृ0 330
21— जैन मिनिएचर पेन्टिग्स फ्रॉम वेस्टर्न इण्डिया, चित्र संख्या 60,61,62,69,72
22— दी आइकोनोग्रामी ऑफ बुद्धिस्टिक एण्ड ब्राह्मेनिकल कल्चर्स इन दी काका म्यूजियम, पृ0 49
23— तत्रैव, पृ0 30
24— रघुवंश 8.4.7, कुमारसम्भव 4.43
25— दॉ आइकोनोग्राफी आूफ बुद्धिस्टिक एण्ड ब्राहमेनिकल स्कल्पचर्स इन दी ढाका म्यूजियम, पृ0 147
26— महाभारत 7.106.129
27— अर्थशास्त्र अधिकरण 2 अध्याय 18
28— अर्थशास्त्र, अधिकरण 2, अध्याय 18
29— शुक्रनीति 4.7.427
30— हिन्दू इकोनोग्राफी, पृ0 147
31— बालभारत 1.84
32— अग्निपुराण, पृ0 405
33— मत्स्यपुराण 160.10
34— अर्थशास्त्र 2.18 की गणपति शास्त्री की टीका।
35— हस्ताः सप्तोत्तमः कुन्तः षड्हस्तैश्चैव मध्यमः।
कनिष्ठः पंचहस्तैस्तु कुन्तमानप्रकीर्तितम्।।
—अर्थशास्त्र 2.18 पर गणपति शास्त्री की टीका
36— अर्थशास्त्र, अधिकरण 2 अध्याय 18

37— अर्थशास्त्र 2.18
38— परशुः पर्वलोहसमश्चतुर्विंशत्यंगलः।
—अर्थशास्त्र 2.18 की गणपति शास्त्री की टीका
39— हिन्दु आइकोनोग्राफी, पृ0 330
40— कालिदास का भारत, भाग 2, पृ0 265
41— कालिदास का भारत, भाग 2, पृ0 267
42— अमरावती स्कल्पजर्स इन दी मद्रास गवर्नमेंट म्यूजियम मद्रास, पृ0 126
43— अर्थशास्त्र, अधिकरण 2, अध्याय 2
44— अर्थशास्त्र पर गणपति शास्त्री की टीका
45— यशस्तिलकचम्पू एक सांस्कृतिक अध्ययन, पृ0 214—215
46— अर्थशास्त्र, अधिकरण 2, अध्याय 18
47— रामायण, युद्धकाण्ड 3.13
48— महाभारत, द्रोण पर्व 179.46
49— ऋग्वेद 9.83, 4, 10, 73
50— अग्निपुराण 251.2
51— शुक्रनीति 4.7
52— दी आर्ट ऑफ वार इन एन्शिएण्ट इण्डिया, पृ0 172